देरोल वाघेला

नाम एवं पता	**श्री दिगम्बर जैन देवपुरी अतिशय क्षेत्र ट्रस्ट, देरोल–वाघेला ग्राम–देरोल–वाघेला, तह.–खेड़बह्म्र , जिला – साबरकांठा, गुजरात) पिन – 383275**	
टेलीफोन	02775 – 241136	
क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ	**आवास**	कमरे (अटैच बाथरूम) – × (बिना बाथरूम) – 10 हाल – 1 (यात्री क्षमता – 70), गेस्ट हाऊस – × **यात्री ठहराने की कुल क्षमता – 170**
	भोजनशाला	है, नियमित – सशुल्क
	औषधालय	है **पुस्तकालय** – नहीं
	विद्यालय	नहीं **एस.टी.डी./पी.सी.ओ.** – नहीं
आवागमन के साधन	**रेलवे स्टेशन**	खेड़बह्म्र – 8 कि.मी., (रेल द्वारा अहमदाबाद से खेड़बह्म्र)
	बस स्टेण्ड	देरोल – बाघेला में बस आती है।
	पहुँचने का सरलतम मार्ग	खेड़बह्म्र–अहमदाबाद, ईडर–हिम्मतनगर मुख्य मार्ग है, बस एंव टेक्सी खेड़बह्म्र से उपलब्ध है।
निकटतम प्रमुख नगर	खेड़बह्म्र – 8 कि.मी.	
प्रबन्ध व्यवस्था	**संस्था**	श्री दिगम्बर जैन देवपुरी अतिशय क्षेत्र ट्रस्ट
	अध्यक्ष	श्री मेहता नलिनकुमार वाडीलाल (079–25732557 (का.), (नि.) 27493197), (098250 15965)
	मंत्री	दोशी घनवंतकुमार रतनलाल (02775–241136) (का.), (नि. 241619) (09377460414)
क्षेत्र का महत्व	**क्षेत्र पर मन्दिरों की संख्या**	**: 03**
	क्षेत्र पर पहाड़	:
	ऐतिहासिकता	: खेड़बह्म्र तहसील से पूर्व दिशा में 6 कि.मी. की दूरी पर 'देरोल' ग्राम है, जो पूर्व में 'देवनगरी' या 'देवपुरी' के नाम से विख्यात रहा है। इसे अब 'देरोल' के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में तीन जिनालय है। इनमें से एक श्वेताम्बर बन्धुओं के प्रबन्ध में है। शेष की व्यवसाि दिगम्बर समाज करती है। चतुर्थ शताब्दी की प्राचीन काल की कलात्मक भगवान श्री 1008 आदिनाथ की अतिशयकारी बावन जिनालय की प्रतिमा मंदिर क्रमांक एक में है एवं दूसरे निालय में भगवान श्री 1008 पार्श्वनाि की अतिशयकारी मनोकामनापूर्ण करने वाली चमत्कारी प्रतिमा है। इन दोनों मन्दिरों में सीाि प्रतिमायें दिगम्बर आम्नाय की हैं। मंदिर बावन जिनालय कोठरिया पर संवत् 1115 से 1135 लिखा है। स्थानीय लोग इसे 'लाख्णाना' मंदिर के नाम से जानते हैं।
	विषेश	: भगवान पार्श्वनाथ से मन्नत मांगने पर एवं पूर्ण होने पर, गुड़ एवं शक्कर का प्रसाद रखने पर वहां के लोगों को बाँट दिया जाता हे।
	वार्षिक मेले	**:** हर पूर्णिमा पर मेला लगने पर 1000 से अधिक लोग आते हैं एवं वर्ष में ज्येष्ठ सुदी 10 वीं को बड़ा मेला लगता है।
समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र	तारंगाजी – 65 कि.मी., चितांमणि – पार्श्वनाि – 60 कि.मी., ईडर – 35 कि.मी., भिलोड़ा – 65 कि.मी.	